जी-20 शिखर सम्मेलन की समाप्ति पर प्रधानमंत्री का प्रैस को दिया गया उद्घाटन भाषण

2 अप्रैल, 2009

1. हम विश्व अर्थव्यवस्था के लिए और इस कारण समग्र रूप में विश्व के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर पर लंदन में मिले थे। मैं प्रधानमंत्री श्री गार्डन ब्राउन का जी-20 के नेताओं के इस द्वितीय शिखर की मेजबानी करने के लिए उनके द्वारा की गई पहल के लिए, तथा हमारी बैठकों के लिए की गई अत्युत्तम व्यवस्थाओं के लिए आभार व्यक्त करता हूं।

2. शिखर बैठक का उद्देश्य आज की विश्व अर्थव्यवस्था के समक्ष मौजूद आर्थिक संकट के समाधानों के लिए खोज को आगे बढ़ाना था। विश्व महामंदी के कारण बदतरीन मंदी के दौर से गुजर रहा है। हम यद्यपि प्रभावित तो हुए हैं फिर भी दूसरे देशों से काफी बेहतर स्थिति में है। यह एक वैश्विक समस्या है और इसके लिए वैश्विक समाधान आवश्यक है।

3. आज सुबह और कल शाम को, हमने संकट से निपटने के विभिन्न तरीकों पर चर्चा की। सभी देशों ने मौद्रिक नीति का उपयोग किया है। सभी बड़ी अर्थव्यवस्थाओं द्वारा प्रभावी राजकोषीय प्रेरक का भी सहारा लिया जा रहा है। इस बात पर सहमति बनी थी कि विकासशील देशों के लिए ऋण प्राप्ति (क्रेडिट प्रवाह) को अनिवार्य रूप से बहाल किया जाए। साथ ही इस बात पर भी सहमति बनी थी कि संकट से इस प्रकार से निपटा जाए कि भविष्य के लिए कोई अन्य समस्या उत्पन्न न हो। साथ ही, संरक्षणवाद या व्यापार और जनशक्ति के मुक्त प्रवाह पर प्रतिबंध लाभकारी नहीं होगा। वित्तीय संकट के समाधानों की खोज में न तो विकास को रोका जा सकता है और न ही इसका बलिदान किया जा सकता है। अतः विकासशील देशों की आवश्यकताओं की तरफ विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

4. मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि हमारे विचारों को व्यापक स्वीकृति और समर्थन प्राप्त हुआ है।

5. हमने, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं को समुचित संसाधन उपलब्ध कराकर, विकासशील देशों की ओर पूंजी प्रवाह में हुई कमी को पूरा करने की आवश्यकता

पर बल दिया है। मुझे यह बताने में प्रसन्नता हो रही है कि जी-20 देश आई.एम.एफ. और ए.डी.बी. के संसाधनों को बढ़ाने के लिए तथा आई.एम.एफ. में कोटा समीक्षा को आगे लाने के लिए भी सहमत हैं। नेता नए एस.डी.आर. जारी करने के लिए भी सहमत हैं। ये निर्णय सकारात्मक हैं। उभरती बाजार-अर्थव्यवस्थाओं को संभालने के इसमें कुल मिलाकर 1.1 ट्रिलियन डालर की एक बहुत बड़ी राशि शामिल है। भारत को आई.एम.एफ. से वित्तपोषण की आवश्यकता नहीं है पंरतु हम आई.एम.एफ. के संसाधनों को बढ़ाने के पक्ष में रहे हैं क्योंकि विकासशील देशों को सहायता की आवश्यकता होगी और यह उनकी सहायता करेगा। यह उभरते बाजारों के बारे में विश्वास को बहाल करेगा।

6 हमने विश्व के वित्तीय सिस्टम के लिए नियामक और पर्यवेक्षी संरचना में सुधारों के लिए व्यापक दिशा-निर्देशों पर चर्चा की है और इस पर सहमत भी हैं। इन्हें प्रभावी होने में समय लगेगा परंतु ये अति महत्वपूर्ण हैं। ये दो मुख्य मानक निर्धारक निकायों - वित्तीय स्थायित्व मंच (एफ.एस.एफ.) और बेसले बैंकिंग पर्यवेक्षण समिति द्वारा आगे बढ़ाए जाएंगे। भारत अब दोनों निकायों का सदस्य है। इन निकायों के प्रतिनिधित्व को बढ़ाया जाना एक महत्वपूर्ण सुधार है। वित्तीय विनियम और पर्यवेक्षण के सुधार की दिशा, जिस पर सहमति हुई है, भारत की अपनी विचारधारा के अनुरूप है।

7. इस बैठक ने जी-20 नेताओं की कार्यवाही की उपयोगिता को दर्शाया है, और हम इस वर्ष की अगली छमाही में जी-20 नेताओं की अगली शिखर बैठक के लिए और आज की सहमति वाले मुद्दों को शीघ्र कार्यान्वित करने के लिए उत्सुकता से प्रतीक्षा करेंगे। आज की समस्याओं को निपटाने के लिए तथा समकालीन वास्तविकताओं को प्रदर्शित करने के लिए हमारी वैश्विक आर्थिक नियंत्रक संस्थाओं की भूमिका को निरंतर पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकता है।

8. जैसा कि आपको ज्ञात है कि मुझे कल प्रधानमंत्री गार्डन ब्राउन से मिलने का भी अवसर प्राप्त हुआ था, जहां हमने अपने द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा की थी और भारत-ब्रिटेन संबंधों को आगे ले जाने के तरीकों पर चर्चा की थी। भारत और ब्रिटेन में मानव उद्गम के विविध क्षेत्रों में गहन साझेदारी मौजूद है। हम इस साझेदारी को आगे बढ़ाने के लिए कृतसंकल्प और आश्वस्त हैं।

9. इससे पूर्व, दोपहर में, मैं अमरीका के राष्ट्रपति बराक ओबामा से मिला हूं। यह हमारी पहली मुलाकात थी और इसका माहौल अति उत्साहपूर्ण और मैत्रीपूर्ण

था। हमने अपने द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा की थी। मैं भारत-अमरीका संबंधों का कायाकल्प करना संभव करने के लिए, तथा हमारी असैनिक परमाणु पहल को सफलता तक ले जाने के लिए, विगत के कुछ वर्षों में, अमरीकी सीनेट के भीतर और बाहर राष्ट्रपति ओबामा द्वारा किए गए सभी कार्यों के लिए उन्हें धन्यवाद ज्ञापित करता हूं। आज हमने भारत अमरीका वैश्विक साझेदारी को आगे बढ़ाने के लिए उठाए जाने वाले अनेक सकारात्मक और रचनात्मक कदमों पर चर्चा की थी।

10. हमने, हमारे पड़ोसी देशों से होने वाले और सभी मुक्त समाजों के समक्ष मौजूद आंतकवाद के खतरे तथा इस समस्या से निपटने के लिए अपेक्षित अंतरराष्ट्रीय प्रयासों सहित, क्षेत्रीय और वैश्विक विषयों पर चर्चा की थी। इस संबंध में हमारे विचार और प्रस्ताव काफी मिलते-जुलते थे। राष्ट्रपति ओबामा ने मुझे अफगानिस्तान और पाकिस्तान के लिए नई बृहत अमरीकी रणनीति की जानकारी दी। मैं समस्याओं और लक्ष्यों के उनके स्पष्ट कथनों का स्वागत करता हूं। भारत अपने क्षेत्र में रचनात्मक भूमिका अदा करना तथा शांति और स्थायित्व स्थापित करने के लिए कार्य करना जारी रखेगा।

11. मैं इस बात से संतुष्ट होकर लंदन से जा रहा हूं कि मेरी द्विपक्षीय और अन्य बैठकें फलदायी और उपयोगी रही हैं और जी-20 नेताओं के शिखर सम्मेलन ने आगे का मार्ग प्रशस्त किया है। वैश्विक संकट से पार पाने की प्रक्रिया सरल नहीं होगी। नेताओं के बीच सद्भावना और बुद्धि का सामंजस्य लंदन में विगत दो दिनों के दौरान संभव हुआ था, और विश्व के पास संकट का समाधान प्रारंभ करने के लिए आधार मौजूद है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय ऐसा करने के लिए एक साथ मिलकर कार्य कर सकता है और उसे ऐसा करना ही होगा।

****